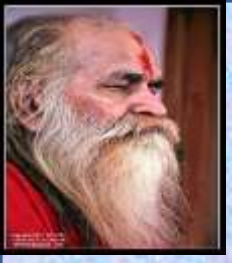

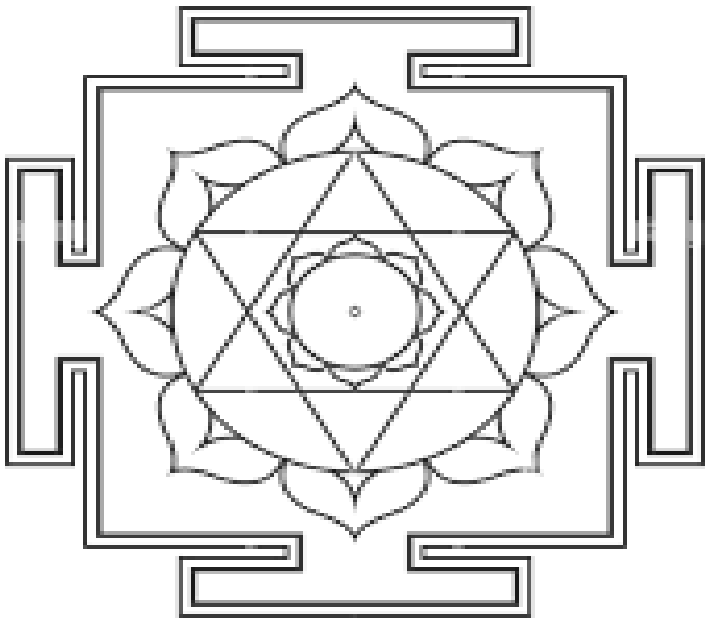

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

श्री कमलाम्बा : दशम महाविद्या

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानां श्रियम् ।
विभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः कीरीटोज्जवलां ,
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ।।

श्रीमद्भागवत के आठवें स्कन्ध के आठवें अध्याय में कमला के उद्भव की विस्तृत कथा आयी है । देवताओं एवं असुरों के द्वारा अमृत-प्राप्ति के उद्देश्य से किये गये समुद्र-मन्थन के फलस्वरूप इनका प्रादुर्भाव हुआ था । इन्होंने भगवान् विष्णु को पतिरूप में वरण किया था । महाविद्याओं में ये दसवें स्थान पर परिगणित हैं । भगवती कमला वैष्णवी शक्ति हैं तथा भगवान् विष्णु की लीला-सहचरी हैं, अतः इनकी उपासना जगदाधार-शक्ति की उपासना है । ये एक रूप में सच्चिदानन्दमयी लक्ष्मी हैं, जो भगवान् विष्णु से अभिन्न हैं । देवता, मानव एवं दानव-सभी इनकी कृपा के बिना पङ्गु हैं । इसलिये आगम और निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है । सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, सिद्ध और गन्धर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिये लालायित रहते हैं ।

महाविद्या कमला के ध्यान में बताया गया है कि इनकी कान्ति सुवर्ण के समान है । हिमालय के सदृश श्वेत वर्ण के चार हाथी अपने सूँड़ में चार सुवर्ण कलश लेकर इन्हें स्नान करा रहे हैं । ये अपनी भुजाओं में वर एवं अभय मुद्रा तथा दो भुजाओं में दो कमल पुष्प धारण की हैं । इनके सिर पर सुन्दर किरीट तथा तन पर रेशमी परिधान सुशोभित है । ये कमल के सुन्दर आसन पर आसीन हैं ।

समृद्धि की प्रतीक महाविद्या कमला की उपासना स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति तथा नारी-पुत्रादि के सौख्य के लिए की जाती है । कमला को लक्ष्मी तथा षोडशी भी कहा जाता है । भार्गवों के द्वारा पूजित होने के कारण इनका एक नाम भार्गवी है । इनकी कृपा से पृथ्वीपतित्व तथा पुरुषोत्तमत्व दोनों की प्राप्ति हो जाती है । भगवान् आद्य शंकराचार्य के द्वार। विरचित कनकधारा स्तोत्र और वेदोक्त-श्रीसूक्त पाठ, कमलगट्टों की माला पर श्री मन्त्र का जप, बिल्व पत्र तथा बिल्वफल के हवन से कमला की विशेष कृपा प्राप्त होती है । स्वतन्त्र-तन्त्र में कोलासुर के वध के लिये इनका प्रादुर्भाव होना बताया गया है । वाराहीतन्त्र के अनुसार प्राचीनकाल में ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव द्वारा पूजित होने के कारण कमला का एक नाम त्रिपुरा प्रसिद्ध हुआ । कालिकापुराण में कहा गया है कि त्रिपुर शिव की भार्या होने से इन्हें त्रिपुरा कहा जाता है । शिव अपनी इच्छा से त्रिधा हो गये । इनका उर्ध्व भाग गौरवर्ण, चार भुजावाला, चतुर्मुख ब्रह्मरूप कहलाया । मध्य भाग नीलवर्ण, एकमुख और चतुर्भुज विष्णु कहलाया तथा अधोभाग स्फटिक वर्ण, पञ्चमुख और चतुर्भुज शिव कहलाया । इन तीनों शरीरों के योग से शिव त्रिपुर और उनकी शक्ति त्रिपुरा कही जाती है । चिन्तामणि गृह में इनका निवास है । भैरवयामल तथा शक्तिलहरी में इनके रूप तथा पूजा-विधान का विस्तृत वर्णन किया गया है । इनकी उपासना से समस्त सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं ।

पुरुषसूक्त मे '**श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या**' कहकर कमला को परम पुरुष भगवान् विष्णु की पत्नी बतलाया गया है । अश्व, रथ, हस्ति के साथ उनका सम्बन्ध राज्य-वैभव का सूचक है, पद्मस्थित होने तथा पद्मवर्णा होने का भी संकेत श्रुति में है । भगवच्छक्ति कमला के पाँच कार्य हैं-तिरोभाव, सृष्टि, स्थिति, संहार और अनुग्रह । भगवती कमला स्वयं कहती हैं कि नित्य निर्दोष परमात्मा नारायण के सब कार्य मैं स्वयं करती हूँ । इस प्रकार काली से लेकर कमला तक दशमहाविद्याएँ सृष्टि और व्यष्टि, गति, स्थिति, विस्तार, भरण-पोषण, नियन्त्रण, जन्म-मरण, उन्नति-अवनति, बन्धन तथा मोक्षकी अवस्थाओं की प्रतीक हैं । ये अनेक होते हुए भी वस्तुतः परमात्मा की एक ही शक्ति हैं । (गीता प्रेस से साभार...)

दशम महाविद्या कमला का अधिष्ठानकाल रोहिणी नक्षत्र है । इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले का जीवन सुखी एवं समृद्ध रहता है । धूमावती तथा कमला परस्पर विपरीत है । धूमावती जेष्ठा है, असुरि हैं, दरिद्र हैं तो वहीं कमला कनिष्ठा हैं, दिव्या है और लक्ष्मी है । विष्णु पुराणोक्त परा विष्णु शक्ति श्रीमहालक्ष्मी हैं, जिनके कमला, पद्म, श्री, लक्ष्मी इत्यादि अन्य नाम भी हैं । भगवान विष्णु प्राणी मात्र के हृदय में रहते है और लक्ष्मी उन विष्णु के हृदय में विराजती है अतः हमें देवी से दया-भाव का आश्रय लेना चाहिए । **दशमहाविद्याओं के अन्तर्गत सभी देवियाँ एक ही परा शक्ति की प्रतिरूप है ।** श्रीमूर्ति के दाये बायें हाथी स्वर्ण कलश में जल भरे हुये उन्हें स्नान कराते रहते हैं इसका तात्पर्य यह है बुद्धिमान मनुष्य धन एवं ऐश्वर्य पाकर उसे भगवती के ही श्री चरणो में समर्पित करते रहते हैं । हाथी को अत्यन्त बुद्धिमान पशु माना गया है । अतः शुभ कार्यो में धन को व्यय करना बुद्धिमानी है और यही भगवती की प्रसन्नता का कारण बनता है ।

ब्रह्म का प्रत्येक कार्य शक्ति आश्रित है और उस शक्ति को महालक्ष्मी कहा गया है । वैकृतिक रहस्यम् में बतलाया गया है कि चतुर्भुजा महालक्ष्मी (मूल प्रकृति) ने क्रमशः तमोगुण और सत्त्वगुणरूप उपाधि के द्वारा अपने दो रूप प्रकट किये, जिनको क्रमशः महाकाली और महासरस्वती के नाम से प्रसिद्धि हुई। उन तीनो देवियों ने स्त्री-पुरुष का एक-एक जोड़ा उत्पन्न किया। महाकाली से शंकर और सरस्वती, महालक्ष्मी से ब्रह्मा और लक्ष्मी तथा महासरस्वती से विष्णु और गौरी का प्रादुर्भाव हुआ। इनमें लक्ष्मी विष्णु को, गौरी शंकर को तथा सरस्वती ब्रह्माजी को प्राप्त हुईं। पत्नी सहित ब्रह्मा ने सृष्टि, विष्णु ने पालन तथा रुद्र ने संहार का कार्य सँभाला। आद्यालक्ष्मी अनादि और अनन्ता हैं और जगत कल्याण के लिये उन्होने कई अवतार लिये हैं । स्वरूप अनुसार नामों में भिन्नता है पर मूलतः सभी पराशक्ति आद्यलक्ष्मी की प्रतिरूपा ही हैं । इनमें से ही एक भगवती कमला हैं । दशम महाविद्या कमला की सपर्या विविध मन्त्रों से होती है। इनका मूलमन्त्र **श्रीं** है । यहाँ हमने सपर्या एवं आवरण पूजा में कमला के एकाक्षर मन्त्र **श्रीं** से एवं द्वादशाक्षर मन्त्र **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः जगत्प्रसूत्यै नमः** का विधान प्रस्तुत किया है जो परम्परानुसार अनुमोदित है । इसमें द्वादशाक्षर मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा हैं तथा एकाक्षर मन्त्र के ऋषि भृगु हैं । साधकगण जिस स्वरूप में ग्रहण करें भगवती का अनुग्रह प्राप्त होना सुनिश्चित है ।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ।।
महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।।